डी जी आर
समाचार पत्र

भाकृअनुप ICAR

खंड XI | संख्या 3-4 | जुलाई - दिसम्बर 2012

सौराष्ट्र क्षेत्र में मूँगफली की फसल में अमुख्य-कीटों का पाया जाना

वर्ष २०११-१२ के खरीफ तथा रबी के मौसम में गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में मूँगफली की फसल के सर्वेक्षण के दौरान, दो अमुख्य-कीट नामतः राख घुन (ऐश वीविल) और फफोला भृंग (ब्लिस्टर बीटल) इस क्षेत्र में देखे गए। राख वीविल की मौजूदगी खरीफ और रबी, दोनों मौसमों में पाई गई, जबकि सफेद फफोला भृंग केवल खरीफ मौसम में ही देखा गया। वयस्क राख घुन, मूँगफली की पत्तियों के हाशिये (मार्जिन) को काटते हुए उसकी पत्तियों को खा जाता है और लगभग ५ से १० प्रतिशत तक पर्णीय क्षति पहुँचा सकता है। जबकि वयस्क फफोला भृंग मुख्य रूप से मूँगफली का फूल खाता है जिसके परिणामस्वरूप प्रति पादप फलियों की संख्या कम हो जाती है। इन अमुख्य-कीटों की मौजूदगी वर्ष २०११-१२ में इस क्षेत्र प्रथम बार दर्ज की गई। हमारे संज्ञान में इस क्षेत्र में इन कीटों की मौजूदगी की पहले कभी कोई सूचना अथवा प्रकाशित रिपोर्ट नहीं है। जलवायु में परिवर्तन तथा वर्षा का विभिन्न क्षेत्रों में अनियमित वितरण, इनकी कीटों की इस क्षेत्र में मौजूदगी का एक कारण हो सकता है। इन अमुख्य-कीटों की उत्पत्ति और स्थिति की समुचित जानकारी के लिए नियमित रूप से निगरानी एवं अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है, जिससे कि आवश्यकता पड़ने पर उचित कदम उठाए जा सकें।

फफोला भृंग (ब्लिस्टर बीटल)

राख घुन (ऐश वीविल)

(आदान : हरीश जी., पूनम जसरोटिया और नटराज एम. वी.)

अंतर्वस्तु

सौराष्ट्र क्षेत्र में मुँगफली की फसल में अमुख-कीटों का पाया जाना	01
प्रशिक्षण कार्यक्रम / कार्यशाला	02-03
बैठक	03
सम्मेलन / सेमिनार इत्यादि	04
हिन्दी मास	05
प्रक्षेत्र अन्वेषक दिवस	05
स्थापना दिवस	07
गणमान्य अतिथि	07
हमारे नये सहकर्मी	08
पदोन्नतियां	08
निदेशालय समाचारो में	09
संस्थान सेमिनार	10

जेन-बैंक (NCBI) को दिए गए माइक्रोबियल संवर्धनों का अनुक्रमणन (अगस्त, २०१२)

संवर्धन	जेन-बैंक प्राप्ति क्रमांक
२५ संस्थानों के संवर्धनो का १६ s rRNA अनुक्रमणन	जेएक्स ५१४४०२ -- ५१४४२६
कच्छ के रन के नमक क्रिस्टलकों से प्राप्त १२ कवकों का आईटीएस 1 (ITS 1) का अनुक्रमणन	जेएक्स ५१८२४७ -- ५१८२५८
कच्छ के रन के नमक क्रिस्टलकों से प्राप्त ११ तीव्र लवणरागी बेसिली के १६ s rRNA का अनुक्रमणन	जेएक्स ५१८२५९ -- ५१८२६९
मूँगफली के बीज ऊतकों से प्राप्त १९ इंडोफाइटिक कवकों के आई. टी. एस. का अनुक्रमणन	जेएक्स ५१८२७० -- ५१८२८८
कच्छ के रन के अत्यधिक लवणता के अनुकूल मूँगफली एवं अन्य प्राकृतिक पादपों से प्राप्त ७४ बैक्टीरियल इंडोफाईट्स के १६ s rRNA का अनुक्रमणन	जेएक्स ४९००५५ -- ४९०१२८

प्रशिक्षण कार्यक्रम / कार्यशाला

कोडिनार में 'एफ्लाटॉक्सिन-मुक्त मूँगफली के उत्पादन के लिए उन्नत पद्धतियां' हेतु कार्यशाला (७ सितम्बर, २०१२)

'एफ्लाटॉक्सिन-मुक्त मूँगफली के उत्पादन हेतु उन्नत पद्धतियों के संबंध में एक-दिवसीय कार्यशाला का कृषि विज्ञान केन्द्र (के. वी. के.), कोडीनार में ७ सितम्बर, २०१२ को आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कुल ९९ प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें ८२ मूँगफली उत्पादक किसान तथा १७ वैज्ञानिक व तकनीकी कार्मिक थे। श्री दलसुख वघासिया, (क्षेत्र कार्यक्रम प्रबंधक, अम्बुजा सिमेंट फाउंडेशन) ने बाजार में खाद्य तेल के बढ़ते हुए मूल्यों और पशु आहार के रूप में मूँगफली की खली की बढ़ती मांग को देखते हुए सौराष्ट्र क्षेत्र में मूँगफली की खेती के महत्व से प्रतिभागियों को अवगत कराया। कुमारी कंचन मौर्य (परियोजना समन्वयकर्ता, आई. ओ. पी. ई. पी. सी., मुम्बई) ने मूँगफली में एफ्लाटॉक्सिन संदूषण और यूरोपीय संघ के देशों से मिल रही बढती चेतावनियों पर चिंता व्यक्त करते हुए प्रतिभागी किसानों से आग्रह किया कि वे अच्छी कृषि पद्धतियाँ, विनिर्माण और भंडारण पद्धतियाँ अपनाकर एफ्लाटॉक्सिन-मुक्त मूँगफली का उत्पादन करने हेतु इस कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाऐ। आई. ओ. पी. ई. पी. सी. के प्रतिनिधि श्री रूपेश जिमूधिया ने किसानों से अनुरोध किया कि वे एफ्लाटॉक्सिन-मुक्त मूँगफली का उत्पादन करने के लिए और विश्व में मूँगफली के उत्पादन में सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक बनने के लिए उन्नत पद्धतियाँ अपनाऐं।

तत्पश्चात् डॉ. कुलदीप सिंह जादोंन (वैज्ञानिक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय) ने 'मूँगफली में एफ्लाटॉक्सिन का खतरा-कुछ महत्वपूर्ण नियंत्रण उपाय' के संबंध में व्याख्यान दिया। उद्घाटन सत्र के पश्चात् विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा 'एफ्लाटॉक्सिन-मुक्त मूँगफली के उत्पादन के लिए उन्नत पद्धतियों' पर गुजराती में व्याख्यान दिए गए। प्रतिनिधियों ने वैज्ञानिकों के साथ चर्चा की और अपनी आशंकाओं का निवारण किया। इस कार्यशाला ने मूँगफली के उत्पादकों, संसाधकों और व्यापारियों के एफ्लाटॉक्सिन के मुद्दे का समाधान करने के लिए एक मंच प्रदान करने का कार्य किया।

एफ्लाटॉक्सिन-मुक्त मूँगफली का उत्पादन करने हेतु इस निदेशालय के वैज्ञानिक कोडिनार के किसानों को व्याख्यान देते हुए

कृषि विज्ञान केन्द्र, बीकानेर में 'एफ्लाटॉक्सिन-मुक्त मूँगफली उत्पादन करने के लिए उन्नत पद्धतियां' हेतु कार्यशाला (३० नवम्बर, २०१२)

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, बीकानेर, एपीडा तथा आई. ओ. पी. ई. पी. सी. द्वारा संयुक्त रूप से ३० नवम्बर, २०१२ को कृषि विज्ञान केन्द्र, बीकानेर में 'एफ्लाटॉक्सिन-मुक्त मूँगफली का उत्पादन करने के लिए उन्नत पद्धतियाँ' के संबंध में एक एक-दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। श्री सुनील कुमार (सचिव, एपीडा) ने मूँगफली की खेती की के महत्व एवं निर्यात में एफ्लाटॉक्सिन संदूषण को कम करने के संबंध में प्रतिभागियों को संबोधित किया। डॉ. आई. जे. गुलाटी (प्रोफेसर, राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर) ने उपस्थित प्रतिभागियों को मूँगफली में एफ्लाटॉक्सिन के संदूषण का प्रबंधन करने में उन्नत पद्धतियों के महत्व के बारे में जानकारियाँ दीं तथा इस जोखिम को कम करने के लिए अधिक जैविक खेती करने का आग्रह किया। इसके बाद मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के वैज्ञानिकों डॉ. कुलदीप सिंह जादोंन, डॉ. एच. एन. मीणा, श्री हरीश जी. और डॉ. प्रसन्ना होलाजेर ने मानव और पशुओं पर एफ्लाटॉक्सिन के प्रभाव, विश्व में मूँगफली में एफ्लाटॉक्सिन संदूषण के संबंध में विनियमों और फफूंद की उत्पत्ति को रोकने के लिए कुछ महत्वपूर्ण नियंत्रण उपायों और कटाई-पूर्व, कटाई के दौरान और कटाई-उपरांत उत्पादक-संसाधकों-व्यापारियों-निर्यातकों की सुपुर्दगी श्रृंखला में बाद में होने वाले एफ्लाटॉक्सिन संदूषण के संबंध में सभी प्रतिभागियों को अवगत कराया।

विशेषज्ञों के व्याख्यान सुनते हुए मूँगफली उत्पादक

'गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों में प्रौद्योगिकीय हस्तक्षेप द्वारा मूँगफली की उत्पादकता में वृद्धि' के संबंध में प्रशिक्षण (२४-२६ दिसम्बर, २०१२)

'गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों में प्रौद्योगिकीय हस्तक्षेप द्वारा मूँगफली की उत्पादकता में वृद्धि' के संबंध में एक तीन-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम २४ से २६ दिसम्बर, २०१२ तक इस निदेशालय में आयोजित किया गया। गुजरात के नवसारी जिले के चवालीस आदिवासी किसानों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। २४ दिसम्बर को इस निदेशालय के निदेशक डॉ. जितेन्द्र भूषण मिश्र के उद्घाटन भाषण के साथ इस कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। इस निदेशालय तथा जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ के विशेषज्ञों द्वारा मूँगफली की खेती के लिए उन्नत कृषि पद्धतियों, मूँगफली के प्रमुख कीट व रोग तथा उनका प्रबंधन, एफ्लाटॉक्सिन संदूषण को कम करना, मूँगफली में माईक्रो-न्यूट्रीएन्ट्स और जैव-उर्वरक का प्रयोग और उनके लाभ, वैल्यू-एडीशन, यंत्रीकरण और मूँगफली की फसल में चुनौतियों के साथ बाजार अवसर के संबंध में व्याख्यान दिए गए। २६ दिसम्बर को प्रशिक्षण उपरांत मूल्यांकन किया गया जिससे पता चला कि सभी किसान पाठ्यक्रम की विषय वस्तु तथा पढ़ने के लिए दी गई सामग्री की गुणवत्ता से पूर्ण रूप से संतुष्ट थे। अंत में, प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित करने के बाद श्री मुरलीधर मीणा, प्रशिक्षण समन्वयकर्ता द्वारा प्रशिक्षण का समापन किया गया।

गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों से मूँगफली का उत्पादन करने वाले किसान

बैठक

पंचवर्षीय समीक्षा दल की बैठक (१४ जुलाई, २०१२)

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय और एआईसीआरपी-जी के अनुसंधान कार्य में हुई प्रगति और कार्य- निष्पादन की समीक्षा हेतु १८ जुलाई २०१२ को मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में पंचवर्षीय समीक्षा दल की बैठक हुई। इस दल में ये सदस्य शामिल थे -- डॉ. डी. एम. हेगडे, पूर्व पी. डी., डी. ओ. आर. (अध्यक्ष); डॉ. एस. एन. निगम, प्रधान मूँगफली प्रजनक, इक्रीसैट, हैदराबाद; डॉ. एस. एस. मेहेत्रे, अनुसंधान निदेशक, एम. पी. के. वी., राहुरी; डॉ. डी. वी. सिंह, पादप रोग विज्ञान, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली; डॉ. पद्मा राजु, अनुसंधान निदेशक, ए. एन. जी. आर. ए. यू., हैदराबाद एव डॉ. राधाकृष्णन टी., मूँगफली अनुसंधान निदेशालय। पंचवर्षीय समीक्षा दल की यह अंतिम बैठक थी जो संस्थान प्रबंधन समिति (आई. एम. सी.) की बैठक के साथ इंटरफेस की गई जिसमें पंचवर्षीय समीक्षा दल ने संस्थान प्रबंधन समिति को अपनी अंतिम रिपोर्ट के संबंध में अवगत कराया। दल ने मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के अनुसंधान और विकास कार्यों की जांच व उसका मूल्यांकन किया और अपनी अंतिम रिपोर्ट दी।

सम्मेलन / कार्यशाला / सेमिनार / संगोष्ठियां / प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया

श्री नटराज एम. वी.	प्रशिक्षण : कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलौर में 'कीटों और कुटकियों का वर्गीकरण' २५ जुलाई से १४ अगस्त, २०१२
डॉ. आर. डे और डॉ. अनीता मान	प्रशिक्षण : भारतीय प्रशासनिक स्टाफ कॉलेज, हैदराबाद में 'वैज्ञानिकों के लिए सामान्य प्रबंधन कार्यक्रम' १७-२८ सितम्बर, २०१२
डॉ. जितेन्द्र भूषण मिश्र डॉ. राधाकृष्णन टी. डॉ. चुनी लाल, डॉ. एस. के. बेरा, डॉ. नरेन्द्र कुमार और डॉ. अभय कुमार	अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन : 'फली आनुवंशिकी और जीनोमिकी' हेतु हैदराबाद में VI^{th} अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन' (आईसीएलजीजी) २-७ अक्तूबर, २०१२
डॉ. कुलदीप सिंह जादोंन जीनोमिकी	प्रशिक्षण : भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में 'भारतीय कृषि में उभर रहे पादप रोगजनों की और निदान' ३-२३ अक्तूबर, २०१२
श्री एम. डी. मीणा	कार्यशाला : एन. ए. ए. आर. एम., हैदराबाद में कृषि में आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन १५ - १९ अक्तूबर,२०१२
डॉ. अजय बी. सी. और डॉ. एम. सी. डागला	प्रशिक्षण : तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बतूर में 'जीनोमिकी के युग में परिमाणात्मक आनुवंशिकी' १६ नवम्बर से ०६ दिसम्बर, २०१२
डॉ. पूनम जसरोटिया	प्रशिक्षण : नेशनल ब्यूरो आफ एग्रीकल्चरली इम्पोर्टेन्ट इन्सेक्ट्स, बंगलौर में २०१२ से 'जैव सूचना विज्ञान : कीट अनुसंधान हेतु विधियां और संकल्पनाएं' १९ नवम्बर से ०१ दिसम्बर, २०१२
श्री नटराज एम. वी.	सम्मेलन : हैदराबाद में 'खाद्य सुरक्षा के लिए पादप स्वास्थ्य प्रबंधन के संबंध में अंतर राष्ट्रीय सम्मेलन' २८ - ३० नवम्बर, २०१२
डॉ. के. के. पाल और डॉ. के. चक्रवर्ती	राष्ट्रीय संगोष्ठी : यूबीकेवी, कूच बिहार में 'परिवर्तनशील जलवायु स्थिति में जैव और अजैव प्रतिबल' २९ - ३० नवम्बर, २०१२

गतिविधियां

पारथेनियम जागरूकता दिवस (१८ अगस्त, २०१२)

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ ने पारथेनियम के हानिकारक प्रभावों और इसके प्रभावकारी प्रबंधन के संबंध में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए १८ अगस्त, २०१२ को पारथेनियम जागरूकता दिवस मनाया। इस अवसर पर, डॉ. नवीन कुमार जैन, प्रधान वैज्ञानिक और प्रमुख, फसल उत्पादन इकाई ने 'पारथेनियम एक हानिकर खरपतवार का प्रबंधन' के संबंध में एक व्याख्यान दिया। डॉ. जैन ने अपने व्याख्यान में इस खरपतवार को पूरी तरह से उखाड़ने और नष्ट करने हेतु बैठकें व प्रदर्शन आयोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया। इसके अलावा उन्होंने कांग्रेस-घास को नियंत्रित करने हेतु विभिन्न संभव उपाय जैसेकि शाकनाशियों, जैव-एजेंटों के उपयोग और कैसिया प्रजाति जैसे स्पर्धी पादप के प्रयोग के बारे में बताया।

डॉ. जितेन्द्र भूषण मिश्र, निदेशक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय ने इस सम्मेलन में उपस्थित सभी प्रतिभागियों को सूचित किया कि पारथेनियम टी. एस. वी. का एक वैकल्पिक परपोषी है जिससे मूँगफली में फली ऊतकक्षय रोग होता है। डॉ. मिश्र ने पारथेनियम के अत्यधिक हानिकारक प्रभावों को देखते हुए, इस खरपतवार को पूरी तरह से नियंत्रित करने की अनिवार्यता पर भी बल दिया। इस व्याख्यान के बाद, सभी वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों, वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं, कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं और दक्ष सहायकों द्वारा समीपवर्ती कार्यालय के परिसर में कांग्रेस-घास को उखाड़ा गया।

निदेशक तथा अन्य कर्मचारी 'पारथेनियम जागरूकता दिवस' पर पारथेनियम उखाड़ते हुए

हिन्दी मास (सितम्बर, २०१२)

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ में प्रत्येक वर्ष हिन्दी दिवस, सप्ताह या पखवाड़ा मनाया जाता है। इसी श्रृंखला में इस वर्ष निदेशालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने सितम्बर, २०१२ को 'हिन्दी मास-२०१२' के रूप में मनाने का निर्णय लिया। दिनांक ०३ सितम्बर, २०१२ को इस निदेशालय में 'हिन्दी मास' का शुभारम्भ किया गया, जिसमें डॉ. मनेश चन्द्र डागला (वैज्ञानिक एवं प्रभारी-हिन्दी अधिकारी) ने पूरे निदेशालय परिवार के सदस्यों का स्वागत किया तथा राजभाषा से संबंधित नियमों की जानकारी दी। इसके साथ ही उन्होंने राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयासों से सभी को अवगत कराया।

डॉ. जितेन्द्र भूषण मिश्र, निदेशक तथा अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने भी सभी सदस्यों को इस कार्यक्रम के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की तथा निदेशालय में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने यह भी कहा कि आने वाले कुछ समय में राजभाषा के लिए डी. जी. आर. हेतु निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर लिया जाएगा। डॉ. अमृत लाल सिंह (प्रधान वैज्ञानिक) ने भी पूरे निदेशालय परिवार को इस सुअवसर पर बधाई दी। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि हिन्दी लिखते या बोलते समय अंग्रेजी शब्दों का उपयोग नहीं करना चाहिए तथा अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते समय सतर्क रहना चाहिए।

हिन्दी मास-२०१२ के दौरान सात रोचक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जो कि इस प्रकार थे - आशुभाषण, सामान्य हिन्दी ज्ञान, भाषण, वाद-विवाद, निबंध लेखन, अन्ताक्षरी तथा टिप्पणी व मसौदा लेखन। अन्ताक्षरी के अलावा सभी प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों के 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्रानुसार समूह बनाए गए तथा प्रत्येक समूह के प्रतिभागियों में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय विजेता चुने गए।

२९ सितम्बर, २०१२ को 'हिन्दी मास-२०१२' का समापन समारोह आयोजित किया गया जिसमें डॉ. दीपिकाबेन दवे, (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, बहाऊदीन कला महाविद्यालय, जूनागढ़) को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम डॉ. मनेश चन्द्र डागला ने सभी का स्वागत किया तथा हिन्दी मास में हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। मंच पर विराजमान मुख्य अतिथि का निदेशक महोदय द्वारा पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया। साथ ही सभी अन्य प्रतिभागियों को भी सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए। डॉ. दीपिकाबेन दवे ने निदेशालय परिवार को संबोधित करते हुए इस कार्यक्रम की काफी सराहना की। डॉ. दवे ने हिन्दी भाषा के बारे में काफी रुचिकर जानकारियां दी तथा हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी साहित्य की भूमिका के बारे में विस्तारपूर्वक बताया।

निदेशक महोदय ने अपने संबोधन में दीपिकाबेन का समस्त निदेशालय की तरफ से धन्यवाद दिया, तथा निदेशालय के सभी सदस्यों से अपील की कि हम सभी को ज्यादा से ज्यादा कार्य हिन्दी में ही करने का प्रयास करना चाहिए। अंत में श्री एच. बी. लालवाणी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। इस तरह 'हिन्दी मास-२०१२' इस निदेशालय में बड़े ही उत्साह, प्रेम, उमंग तथा जिम्मेदारी के साथ मनाया गया।

हिन्दी मास के अवसर पर मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ में आयोजित उद्घाटन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

प्रक्षेत्र अन्वेषक दिवस (१५ सितम्बर, २०१२)

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ ने सौराष्ट्र क्षेत्र के किसानो को मूँगफली का सतत उत्पादन व इसकी उत्पादकता में वृद्धि करने हेतु इसकी खेती की उन्नत पद्धतियों के बारे में जानकारी देने के लिए १५ सितम्बर, २०१२ को प्रक्षेत्र अन्वेषक दिवस का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में कोडीनार, राजकोट, मेंदरा, वाडल, मेंदापारा, बडोदर, गोंडल, जाम्बुर, सिखन, सुरपारा, मालपारा आदि गाँवो से लगभग ५०० पुरुष व महिला किसान सम्मिलित हुये।

डॉ. नवीन कुमार जैन, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, फसल उत्पादन इकाई ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया। उद्घाटन सत्र में, डॉ. जितेन्द्र भूषण मिश्र, निदेशक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ ने समारोह में उपस्थित सभी किसानों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों का स्वागत किया तथा किसानों से जोर देकर कहा कि वे अपनी उत्पादकता में वृद्धि करने के लिए ऐसे किसान मेलों में सक्रिय रूप से भाग लेकर इनका पूरा लाभ उठाएं। डॉ. ए. एम. परखिया, निदेशक, विस्तार शिक्षा, जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने कृषि उत्पादन में सतत वृद्धि करने के लिए पशुधन को समान महत्व देने और तेल की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पॉलीथीन मल्च के अधीन मूँगफली की खेती करने पर बल दिया। श्री एल. सादिया, उपनिदेशक, कृषि (विस्तार), कृषि विभाग, गुजरात सरकार, जूनागढ़ इस अवसर पर विशेष अतिथि थे। उन्होंने बताया कि सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान वर्ष प्रति वर्ष कम होता जा रहा है और हमें कृषि की उन्नत पद्धतियों को अपनाकर और राज्य सरकार द्वारा समय- समय पर आरंभ किए जाने वाले विभिन्न कृषि कार्यक्रमों का लाभ उठाकर कृषि उत्पादन में वृद्धि करने पर और अधिक जोर देना होगा।

गाँव मालपारा के प्रगतिशील किसान श्री हीरजीभाई भींगराडिया ने अपने वक्तव्य में मूँगफली की उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार करने के लिए पॉलिथीन मल्च के साथ या उसके बिना क्यारियां बनाकर मूँगफली की खेती करने पर जोर दिया और उन्होंने अपने अनुभव किसानों को बताए। महाराष्ट्र राज्य के प्रगतिशील किसान श्री जयकुमार गोंडे ने निम्नीकृत या भारी बनावट वाली मृदाओं में भी मूँगफली की खेती करने के संबंध में अपने अनुभव बताए। उद्घाटन सत्र के बाद, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय और जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों ने, हिन्दी और गुजराती भाषाओं में किसानों को जानकारी देने हेतु मूँगफली के उत्पादन के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों के संबंध में विभिन्न व्याख्यान दिए। विचार-विमर्श के सत्र के दौरान, निदेशालय के वैज्ञानिकों ने किसानों द्वारा पूछे गए सभी प्रश्नों का उत्तर दिये।

इस कार्यक्रम के दौरान एक प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों द्वारा लाए गए कृषि उत्पादों का एक विशेषज्ञ समिति द्वारा मूल्यांकन किया गया तथा समापन सत्र में कुल १९ पुरस्कार प्रदान किए गए। इस निदेशालय द्वारा संस्तुत मूँगफली की विभिन्न उन्नत प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन करने हेतु 'प्रौद्योगिकी पार्क' का दौरा भी आयोजित किया गया। इसके अतिरिक्त, किसानों के लाभ के लिए निदेशालय एवं जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के स्टाल को प्रौद्योगिकीयों का प्रदर्शन करने के लिए लगाए गया। अंत में, डॉ. के. ए. कालरिया, वैज्ञानिक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय ने सभी अतिथियों और किसानों को उनके सक्रिय और रचनात्मक भागीदारी के लिए धन्यवाद किया।

प्रक्षेत्र अन्वेषक दिवस का आयोजन (१५ सितम्बर, २०१२)

તા.૧૭-૦૯-૨૦૧૨
સોમવાર

કેસરી

એનઆરસીજી દ્વારા કૃષિ નવ પ્રવર્તક દિવસની ઉજવણી

ખેતી તારી ખોટમાં ઘાયલ ખેતી તારી ખોટમાં...

ખેડૂતો આધુનિક ટેકનોલોજીનો ઉપયોગ કરે

આ કાર્યક્રમમાં ડીજીઆરનાં નિર્દેશકને પૂછતા જણાવ્યું હતું કે, આજના યુગમાં ઝડપી જમાના સાથે ખેડૂતોને પણ ઝડપી બનવું પડશે. અમારા પાસે ઘણું બધુ જ્ઞાન હોય છે. પરંતુ ખેડૂતોને અમારી પાસે અથવા અમારી સંસ્થાની વારંવાર મુલાકાત લેવી અથવા ટપાલ કે મોબાઇલ દ્વારા જાણતું રહેવું જેથી કરી નવા-નવા સંશોધનથી માહિતગાર થઇ શકે તેમ શ્રી મિશ્રાએ જણાવ્યું હતું.

મગફળી

(જેગલ નાથુ દ્વારા)

જૂનાગઢ તા.૧૬

જૂનાગઢનાં ઈવનગર રોડ પર આવેલ મગફળી સંશોધન નીદેશાલયમાં સંશોધન કેન્દ્રનાં અનેક વૈજ્ઞાનિકો તથા આજુબાજુનાં જિલ્લામાંથી ૫૦૦ જેટલા ખેડૂતો એકઠા થઈને કૃષિ નવ પ્રવર્તક દિવસની ઉજવણી કરવામાં આવી હતી. ભારતીય કૃષિ સંશોધન પરિષદે ૧૯૭૯માં આ નીદેશાલયની શરૂઆત કરી અને ૨૦૦૯માં મગફળી સંશોધન નીદેશાલયનો દરજ્જો આપવામાં આવ્યો છે.

આજના આ કાર્યક્રમમાં જૂનાગઢ, રાજકોટ જિલ્લાનાં અનેક ખેડૂતો આવ્યા હતા. તેમજ ખેડૂતોએ પોતે કરેલા સંશોધન અને આઇડીયાની આપલે કરવામાં આવી હતી. આજના કાર્યક્રમમાં અનેક વૈજ્ઞાનિકો દ્વારા મગફળીની આધુનિક રીતે કેમ ઉત્પાદન લેવું તેના વિશે ચર્ચા-વિચારણા કરવામાં આવી હતી. આ કાર્યક્રમમાં આધુનિક ખેડૂતોએ પોતાના અનુભવનું ભાથુ બીજા લોકોને આપીને કાર્યક્રમને આગળ વધાર્યો હતો.

વૈજ્ઞાનિકો દ્વારા મગફળીના પાક માટે કેટલાક લેકચરો પણ ગોઠવવામાં આવ્યા હતા. નિષ્ણાંતો દ્વારા અનેક સુચનો અને માહિતી આપવામાં આવી હતી. સંશોધન કેન્દ્રનાં વૈજ્ઞાનિકોએ ખડે પગે રહીને આવેલ ખેડૂતોની આગતાસ્વાગતા કરી હતી. કેટલાક સ્ટોલ પણ રાખવામાં આવ્યા હતા જેમાં જંતુનાશક દવાઓ, ખાતર, બિયારણો, પાકમાં થતી ઝેરી ખતરનાક ઈયળો સામે કેમ લડવું તેનું માર્ગદર્શન આપવામાં આવ્યું હતું. કાર્યક્રમમાં ડીજીઆરનાં નિર્દેશક ડો. જે.બી. મિશ્રા, ડો. એ.એમ. પારખીયા, કૃષિ યુનિ. જૂનાગઢનાં ડો. એલ. આર. સાદીયા, ડો. બી. એસ. રાજાવત, ડો. કથીરીયા અને પ્રગતિશીલ ખેડૂત હરજીભાઈ, જયકુમાર ગુન્ડે, ડો. એન. કે. જૈન, ડો. પ્રતાપસિંહ, ડો. કાલરીયા, ડો. ગેડીયા, ડો. ડગલા, ડો. સાવલીયા, ડો. ગોર વગેરે ઉપસ્થિત રહ્યાં હતા.

અંતમાં ડો. કાલરીયાએ તમામ મહેમાનો અને આવેલ ખેડૂતોનો આભાર વ્યકત કરી હાફ સેશન પૂર્ણ કરી આવેલ ખેડૂતોની સાથે મગફળી સંશોધન કેન્દ્રમાં ભોજન ગ્રહણ કર્યું હતું.

(તસ્વીર : અનીલ હરસોરા)

गुजराती समाचार पत्र में मूँगफली अनुसंधान निदेशालय का
प्रक्षेत्र अन्वेषक दिवस

मीडिया के साथ बैठक (२८ सितम्बर, २०१२)

२८ सितम्बर, २०१२ को मूँगफली अनुसंधान निदेशालय ने 'कृषि के संबंध में सूचना को साझा करने के लिए मास मीडिया की सहायता' से संबंधित एन.ए.आई.पी. द्वारा प्रायोजित उप-परियोजना के अंतर्गत मीडिया कर्मियों के साथ एक बैठक आयोजित की। इसका उद्देश्य मूँगफली अनुसंधान निदेशालय द्वारा विकसित की गई पारिस्थितिकी-अनुकूल और आर्थिक दृष्टि से व्यवहार्य तीन नई प्रौद्योगिकियों के संबंध में किसानों, निर्यातकों और कृषि उद्योगों के व्यक्तियों सहित हितधारकों के बीच जागरूकता उत्पन्न करना था। इस बैठक का विषय 'वाणिज्यकरण के लिए डीजीआर प्रौद्योगिकियां' था जबकि 'डीजीआर प्रौद्योगिकियां' शब्द ब्रांड नाम था। लोगों की व्यापक जानकारी के लिए तीन प्रेस नोट जारी किए गए।

प्रत्येक प्रेस नोट को हिन्दी, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषा में मुद्रित कराया गया था और मीडिया कार्मिकों को परिचालित किया गया। पहले प्रेस नोट का शीर्षक 'सेल्युलेस इंजाइम के औद्योगिक उत्पादन हेतु मूँगफली अनुसंधान निदेशालय की प्रौद्योगिकी' था। इसमें यह उल्लेख किया गया था कि अवसंरचना के लिए १० लाख से ५० लाख रूपए तक का निवेश करके कोई व्यक्ति मूँगफली के छिलके (शैल) से सेल्युलेस इंजाइम का उत्पादन कर काफी लाभ अर्जित कर सकता है। दूसरे प्रेस नोट का शीर्षक 'मूँगफली की पैदावार में वृद्धि करने के लिए जैव उर्वरक का मिश्रण --वाणिज्यिकरण के लिए एक अवसर' था। यदि खेत में इस जैव-उर्वरक का उपयोग किया जाता है तो मूँगफली की लगभग १०-२० प्रतिशत अधिक पैदावार प्राप्त की जा सकती है। इसके वाणिज्यिक उत्पादन के लिए मूँगफली अनुसंधान निदेशालय इस प्रौद्योगिकी को इच्छुक व्यक्तियों के साथ साझा करने के लिए तैयार है। तीसरा प्रेस नोट 'मूँगफली अनुसंधान निदेशालय द्वारा मूँगफली की नई 'गिरनार' सीरीज किस्मों का विकास' शीर्षक से जारी किया गया। 'गिरनार २' और 'गिरनार ३' किस्मों के संबंध में मीडिया कर्मियों को सूचना दी गई और मूँगफली उत्पादक समुदाय के बीच इसका व्यापक प्रचार करने पर बल दिया गया। इस कार्यक्रम को आठ प्रिंट मीडिया और दो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा कवर किया गया। बाद में किसानों और औद्योगिक व्यक्तियों ने इस संबंध में और अधिक सूचना प्राप्त करने हेतु मूँगफली अनुसंधान निदेशालय से संपर्क किया। इस प्रकार मीडिया के साथ हुयी यह बैठक सफल रही।

डीजीआर में हुई मीडिया के साथ बैठक

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय का ३३वां स्थापना दिवस
(०१ अक्तूबर, २०१२)

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय का ३३वां स्थापना दिवस ०१ अक्तूबर, २०१२ को मनाया गया । डॉ. एन. सी. पटेल, उप-कुलपति, जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़ इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। अन्य गणमान्य व्यक्ति जैसेकि डॉ. डी. पी. मिश्रा, पूर्व और संस्थापक निदेशक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय; डॉ. के. एस. अमीन, पूर्व प्रधान वैज्ञानिक (पादप रोग विज्ञान, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय और डॉ. आई. यू. ध्रुज, ए. डी. आर., जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़ इस समारोह में उपस्थित थे।

प्रार्थना के साथ कार्यक्रम आरंभ किया गया और तत्पश्चात् डॉ. राधाकृष्णन ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उसके बाद, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. जितेन्द्र भूषण मिश्र ने मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के ३३ वर्षों के अस्तित्व के संबंध में संक्षेप में बताया । डॉ. एन. सी. पटेल, उप-कुलपति, जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़ ने अपने भाषण में उन पुराने दिनों को याद किया जब मूँगफली अनुसंधान निदेशालय स्थापित किया गया था और निदेशालय की जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के साथ लंबे समय से चले आ रहे वैज्ञानिक सहयोग के संबंध में उल्लेख किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इन दोनों संस्थानों के बीच वैज्ञानिक सहयोग को और मजबूत बनाने की आवश्यकता है। मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के संस्थापक निदेशक डॉ. डी. पी. मिश्रा ने अपने भाषण में उपस्थित व्यक्तियों को मूँगफली अनुसंधान निदेशालय की स्थापना और आज तक इसमें क्रमिक रूप से हुई प्रगति के बारे में जानकारी दी । उन्होंने निदेशालय के समस्त कर्मचारियों को इसके लिए बधाई दी और उन्हें संगठन के लिए यथासंभव तथा उत्कृष्ट कार्य करने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के दो प्रकाशन 'मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ -- एक परिचय' तथा 'वार्षिक प्रतिवेदन, २०११-२०१२ (विशिष्ट उपलब्धियां)' का आमंत्रित अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया । इस कार्यक्रम में इस निदेशालय के निदेशक, व उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने प्रत्येक श्रेणी में डीजीआर के सबसे वरिष्ठ कर्मचारियों को सम्मानित किया। अंत में, एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के कर्मचारियों के बच्चों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया। अंत में, डॉ. अनीता मान, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के ३३वें स्थापना दिवस समारोह का उद्घाटन

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के ३३ वें स्थापना दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम

गणमान्य अतिथि
अर्जेंटीना के शिष्टमंडल का दौरा (१५ अक्तूबर, २०१२)

अर्जेंटीना का एक शिष्टमंडल १५ अक्तूबर, २०१२ को मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में आया। इस शिष्टमंडल में श्री गेस्टन मुगलीवन, श्री हुगो जेनेलाटो, श्री इलवियो पेरलो, श्री जर्मन फाउचर, श्री मारियानों गसटाल्डी, श्री जेवियर मार्टीनेटो, सुश्री कीटरिज एक्रेमन, श्री रोबर्टो और श्री संड्रिनी सदस्य थे । ये सभी सदस्य अर्जेंटीना के मूँगफली उद्योग के प्रतिनिधि थे और वे भारत से मूँगफली के आयात की संभावनाओं का पता लगाने हेतु यहां आए थे । मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. जितेन्द्र भूषण मिश्र ने अर्जेंटीना से आए शिष्टमंडल का स्वागत किया तथा मूँगफली अनुसंधान निदेशालय द्वारा किए जा रहे अनुसंधान कार्यों के बारे में उन्हें संक्षेप में जानकारी दी।

तत्पश्चात, दोनों देशों में अपनाई जा रही कृषि पद्धतियों के संबंध में मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के वैज्ञानिकों तथा अर्जेंटीना के शिष्टमंडल के बीच विचार-विमर्श हुआ। जिन अन्य विषयों पर गहन विचार-विमर्श किया उनमें कुछ प्रमुख थे -- भारतीय मूँगफली में भारी धातु अविषालुता की संभावना, उच्च ओ/एल मूँगफली की किस्में, भारत में बड़े बीज वाली मूँगफली की खेती का परिमाण तथा इसकी निर्यात संभावनाएं। इस शिष्टमंडल ने मूँगफली अनुसंधान निदेशालय की प्रयोगशालाओं तथा खेत का भी दौरा किया। अर्जेंटीना के शिष्टमंडल ने मूँगफली अनुसंधान निदेशालय द्वारा किए जा रहे अनुसंधान और विकास कार्यों की अत्यधिक सराहना की। अंत में, निदेशक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय ने अर्जेंटीना के शिष्टमंडल का उनके रचनात्मक विचार-विमर्श और जानकारी के आदान-प्रदान के लिए धन्यवाद दिया।

अर्जेंटीना का शिष्टमंडल मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के अनुसंधान एवं विकास कार्यों में रुचि लेते हुए

हमारे नए सहकर्मी

डॉ. महेश कुमार महात्मा ने ०२ जुलाई, २०१२ को मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में वरिष्ठ वैज्ञानिक, जैव रसायन के पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

डॉ. पूनम जसरोटिया ने १३ अगस्त, २०१२ को मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में वरिष्ठ वैज्ञानिक, कीट विज्ञान के पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

श्री जय आर. पुरोहित ने १७ सितम्बर, २०१२ को मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में कुशल समर्थक कर्मचारी (एस.एस.एस.) के पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

श्री धर्मेन्द्र ए. मकवाना ने १७ सितम्बर, २०१२ को मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में कुशल समर्थक कर्मचारी (एस.एस.एस.) के पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

कार्मिक

श्री जी. सी. प्रसाद, वित्त और लेखा अधिकारी का राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण और भूमि उपयोग आयोजना ब्यूरो (एन. बी. एस. एस. एल. यू.पी.), नागपुर में वरिष्ठ वित्त और लेखा अधिकारी के रूप में पदोन्नति और स्थानान्तरण होने पर उन्हें १८ अगस्त, २०१२ को इस निदेशालय से कार्यमुक्त कर दिया गया।

श्री वी. के. जैन, तकनीकी अधिकारी, टी–५ का केन्द्रीय मृदा और जल संरक्षण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (सी. एस. डबल्यू. सी. आर. टी. आई.), देहरादून, क्षेत्रीय केन्द्र, कोटा, राजस्थान में स्थानान्तरण होने पर उन्हें ३१ अगस्त, २०१२ को इस निदेशालय से कार्यमुक्त कर दिया गया।

श्री वी. के. जैन विदाई स्मृतिचिन्ह निदेशक महोदय से प्राप्त करते हुए

पदोन्नतियां

वैज्ञानिक

डॉ. ए. एल. रत्नकुमार (पादप प्रजानन), डॉ. चुनीलाल (पादप प्रजनन), डॉ. एस. के. बेरा (कोशिकानुवंशिकी), डॉ. के. के. पाल (सूक्ष्म जीव विज्ञान) और डॉ. आर. डे. (सूक्ष्म जीव विज्ञान) कैरियर प्रोन्नति योजना (सी. ए. एस.) के अधीन उनकी संबंधित विद्याओं में प्रधान वैज्ञानिक के पद पर पदोन्नत किए गए।

तकनीकी अधिकारी

नाम	निम्नलिखित पद से	निम्नलिखित पद पर
श्री डी. आर. भट्ट	टी–५	टी–६
श्री एन. एम. शफी	टी–३	टी–४
श्री जी. जी. भलानी	टी–२	टी–३
श्री बी. एम. सोलंकी	टी–२	टी–३
श्री एच. बी. लालवाणी	टी–६	टी–७
डॉ. एच. के. गौड़ा	टी–६	टी–७–८
डॉ. जे. आर. डोबरिया	टी–६	टी–७–८
श्री एच. एस. मिस्त्री	अवर श्रेणी लिपिक	उच्च श्रेणी लिपिक
श्री एल. वी. तिलवाणी	आशुलिपिक	वैयक्तिक सहायक

सेवा–निवृत्ति

श्री जे. बी. भट्ट, ए. ए. ओ. ३० नवम्बर, २०१२ को सेवा–निवृत्त हुए।

श्री जे. बी. भट्ट विदाई स्मृतिचिन्ह प्राप्त करते हुए

29th Sept 2012,Gujarat Samachar

આનંદો, ખેડૂતો ! મગફળીની નવી જાતિ ૨૬ ટકા વધુ ઉપજ આપશે

જૂનાગઢ,તા.૨૧

અનાજ, કઠોળ અને તેલિબિયાના સંશોધનક્ષેત્રે સૌરાષ્ટ્રના ખેડુતોનું નામ દેશભરમાં ચમકતું રહ્યું છે. અલબત આ વખતે જૂનાગઢની કૃષિ યુનિવર્સિટીના કૃષિ વૈજ્ઞાનિકોએ મગફળીની વિશિષ્ટ જાતિ ગિરનાર-૩ શોધી કાઢી છે. જૈવિક ખાતરનાં ઉપયોગથી આ ગિરનાર-૩નામની મગફળી ખેડુતોને હેકટરદીઠ ૨૬ ટકા ઉપજતો વધુ આપશે જ ઉપરાંત તેનાં ફોતરામાંથી પણ ખેડુતો કમાણી કરી શકશે.

વાવેતર બાદ વરસાદમાં ત્રણ માસનો વિલંબ થાય તો પણ મગફળીને વાંધો નહી આવે, ફોતરામાંથી પણ ખેડૂતોને ફાયદો થશે

જૂનાગઢના ઈવનગર રોડ ઉપર કૃષિ અનુસંધાન પરિષદ નવી દિલ્હીનાં નેજા હેઠળ રાષ્ટ્રીય મગફળી સંશોધન કેન્દ્ર કાર્યરત છે. તાજેતરમાં સંશોધન કેન્દ્ર દ્વારા ગિરનાર-૨ નામની નવી મગફળીની પ્રજાતિ વિકસાવવામાં આવી છે. આ પ્રજાતિથી ભરાવદાર સીંગદાણાની ઉપજ મળે છે. તેમજ જૂન મહિનામાં વાવેતર કરવામાં આવે તો આ બીજ પ્રતિ હેકટર ૩૯૭૫ કિલો જેટલું ઉત્પાદન આપે છે. વિવિધ ચકાસણી કરતા જણાયું કે, પાક ભૂમિની ૪૫ટ૧૫સે.મી.ની સરખી સ્થિતીમાં આ જાતિનું બીજ અન્ય પ્રજાતિ એમ-૧૩ કરતા ૨૬ ટકા વધુ ઉપજ રળી આપે છે. આ ઉપરાંત ગિરનાર-૩ નામની જાતિ પાંદડા અને ટ્રીપ્સ મગફળી મુખ્ય જતીની સહિષ્ણુતા ધરાવે છે. આ જાતિના બીજને વાવેતર બાદ ત્રણ માસ સુધી વરસાદ ન થાય તો પણ કંઈ થતું નથી. ત્રણ માસ બાદ વરસાદ થાય તો ઉગી નીકળે છે. આ ગુણ મગફળીમાં ઓછો જોવા મળે છે.

આ ઉપરાંત મગફળીની ઉપજમાં ૧૦થી ૨૦ ટકાનો વધારો થાય એ માટે બેકટેરીયા સંઘનું જૈવ ખાતર મિશ્રણ પણ વિકસવવામાં આવ્યું છે.

જ્યારે મગફળીના કોચલાનો ગ્રામીણ વિસ્તારોમાં બળતણ તરીકે ઉપયોગ થાય છે. તેને ઉત્સેચક કરી ઔદ્યોગિક અને આર્થિક દ્રષ્ટિએ તકનીક વિકસાવાઈ છે. જેનાથી ૧૦૦

મગફળીનાં કોચલા ગૃહ ઉદ્યોગ માટે સોનાની ખાણ સમાન...

ડીજીઆરમાં પ્રેસમીટ બોલાવાઇ

છેવાડાનાં ખેડૂતને પણ નવી શોધાયેલી ટેકનીકની ખબર પડવી જોઈએ : જે.બી. મિશ્રા

(જોગલ નાથા દ્વારા)

જૂનાગઢ તા.૨૮

જૂનાગઢ ખાતે આવેલ મગફળી સંશોધન નિદેશાલયમાં ડાયરેક્ટ જે.બી. મિશ્રાની આગેવાની નીચે એક પ્રેસ મીટનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. જેમાં જૂનાગઢ શહેરનાં કેટલાક અગ્રણીય પત્ર- ... મગફળીનાં પાકને પટ સ્વરૂપે આપવામાં આવે છે. મગફળીનું વાવેતર કર્યા પહેલા પટનાં ભાગે દેવાથી મગફળીનાં પાકને અનેક ફાયદા થાય છે. ડીજીઆરવાં વિજ્ઞાનીકોની મહામહેનત કારણે જૈવ ખાતર તૈયાર થયું છે. પત્રકાર મિત્રોને અપિલ રવામાં આવી હતી કે, નવી ...

દિવ્ય ભાસ્કર | સૌરાષ્ટ્ર | 5

SATURDAY, 29 સપ્ટેમ્બર, 2012

વધુ ઉત્પાદન આપતી મગફળીની નવી બે જાત વિકસાવાઈ

ભાસ્કર ન્યૂઝ.જૂનાગઢ

જૂનાગઢમાં આવેલા મગફળી સંશોધન નિર્દેશાલય દ્વારા મગફળીનું વધુ ઉત્પાદન આપતી ગિરનાર- 2 અને 3 નામની જાત વિકસાવવામાં આવી છે. નિર્દેશાલય દ્વારા આ જાતથી ખેડૂતોને મોટો ફાયદો થવાની આશા સેવાઈ રહી છે.

જૂનાગઢમાં મેંદરડા રોડ પર આવેલી મગફળી સંશોધન નિર્દેશાલય ... બીજ(સીંગદાણા)ની ઉપજ મળતી હોય પ્રતિ હેક્ટર 3,975 કિલો ગ્રામ ઉત્પાદન આપે છે. જે અન્ય પ્રજાતિ કરતા 26ટકા વધુ છે. જ્યારે ગિરનાર-3 નામની પ્રજાતિ એ મધ્યમ ભરાવદાર બીજ સાથે 1500થી 2000 કિલોગ્રામ જેટલી ઉપજ આપે છે. ગિરનાર - 3 પ્રજાતિ પાંદડામાં ખાણીયો અને થ્રીપ્સ, મગફળીનાં મુખ્ય જનીનની સહિષ્ણુતા ધરાવતા હોય બીજ 3 મહિના સુધી પ્રસુપ્તિનો ...

ન્યૂઝ 29th Sept 2012,Sandash

જૂનાગઢના મગફળી સંશોધનં નિર્દેશાલય દ્વારા

દુષ્કાળ અને રોગચાળા સામે ટક્કર ઝીલતી મગફળીની બે જાત શોધાઈ

(પ્રતિનિધિ) જૂનાગઢ, તા.૨૮

ખેતીમાં સૌથી મોટી સમસ્યા સમાન દુષ્કાળ અને રોગચાળા સામે ટક્કર ઝીલી શકે તેવી મગફળીની બે નવી જાત જૂનાગઢના મગફળી સંશોધન નિર્દેશાલય દ્વારા બહાર પાડવામાં આવી છે. ગિરનાર-૨ અને ૩ નામની આ બન્ને જાતમાં જુદા જુદા પ્રકારની વિશેષતાઓ રહેલી છે. જેના કારણે સૌરાષ્ટ્ર સહિત રાજ્ય અને દેશની ખેતીમાં મગફળીના ક્ષેત્રમાં એક નવી દિશા મળી છે.

'ગિરનાર-૨' ૨૬ ટકા વધુ ઉત્પાદન આપશે : 'ગિરનાર-૩' પાણીની અછતને સહન કરી શકે છે

સમગ્ર દેશમાં ખરીફ સિઝનમાં મગફળીનો સારો એવો પાક લેવામાં આવે છે. સૌરાષ્ટ્ર પ્રદેશની લાખ્ખો હેક્ટર જમીનમાં વર્ષની ત્રણેય સિઝનમાં મગફળીનું વાવેતર થાય છે. ગુજરાત મગફળી પકાવતું દેશનું અગ્રીમ રાજ્ય છે. ત્યારે જૂનાગઢમાં આવેલા રાષ્ટ્રીય મગફળી સંશોધન નિર્દેશાલય દ્વારા મગફળીની બે નવી જાતનું સંશોધન કરવામાં આવ્યું છે. આ વિશે વિગતો આપતા મગફળી સંશોધન નિર્દેશાલયના ડાયરેક્ટર જે.બી.મિશ્રાએ જણાવ્યું છે કે, જૂનાગઢના ગિરનારના કારણે આ બન્ને જાતને 'ગિરનાર' નામ આપવામાં આવ્યું છે. ગિરનાર-૨ ની ખેતી ઉત્તરીય રાજસ્થાન, પંજાબ અને ઉત્તર પ્રદેશમાં ખરીફ સિઝનમાં કરવામાં આવી રહી છે. મગફળીની આ જાત હેક્ટરે ૩૯૭૫ કિલોનું ઉત્પાદન આપે છે. અન્ય પ્રજાતિ એમ-૧૩ પ્રતિહેક્ટર ૩૧૫૧ કિલોનું ઉત્પાદન આવે છે. એટલે કે આ નવી પ્રજાતિ ગિરનાર-૨ માં ખેડૂતોને ૨૬ ટકા ઉત્પાદન વધારે મળે છે. સાથે સાથે તેનો દાણો ભરાવદાર હોવાથી ખેડૂતોને તેના બજાર ભાવ સારા મળશે.

જ્યારે ગિરનાર-૩ પ્રજાતિ દુષ્કાળ અને રોગચાળા સામે ટક્કર ઝીલી શકે છે. મગફળીની આ પ્રજાતિમાં ઉત્પાદન ૧૫૦૦ થી ૨૦૦૦ કિલો આવે છે. પાંદડામાં ખાણિયો અને થ્રિપ્સ નામના રોગચાળા સામે વધુ રક્ષણાત્મક શક્તિ ધરાવે છે. જ્યારે આ પ્રજાતિનું બીજ ૩ મહિના સુધીની પ્રસુપ્તીનો ગુણ ધરાવે છે. એટલે કે, બીજનું વાવેતર કર્યા બાદ ત્રણ મહિના સુધી વરસાદ ન પડે તો પણ બીજને વાંધો આવનો નથી. ત્રણ મહિનામાં ગમે ત્યારે વરસાદ પડે એટલે બીજ ઉગી નિકળે છે. મગફળીમાં આવા ગુણ બહુ ઓછા જોવા મળે છે. આ ગુણ ખેડૂતોને આશીર્વાદ સમાન છે ...

શું છે બન્ને મગફળીની વિશેષતા ?

(૧) ગિરનાર ૨ : અન્ય પ્રજાતિ કરતા ૨૬ ટકા જેટલું વધુ ઉત્પાદન, દાણો ભરાવદાર, ગુણવત્તા વધારે

(૨) ગિરનાર ૩ : ખાણીયો-થ્રિપ્સ સામે પ્રતિકાર ક્ષમતા, ત્રણ મહિના સુધી પાણી ન મળે તો પણ બિયારણ જીવંત રહે છે.

જૂનાગઢના મગફળી સંશોધન નિર્દેશાલય દ્વારા ખેડૂતો માટે ઉપયોગી એવી બહાર પાડવામાં આવેલી મગફળીની બે નવી જાત વિશે ડાયરેક્ટર અને વૈજ્ઞાનિકો દ્વારા વિગતો આપવામાં આવી હતી. (ફોટો : ધીરુ પુરોહિત)

મગફળીની ઉપજમાં ૨૦ ટકા સુધીનો વધારો કરતું જૈવ ખાતર મિશ્રણ તૈયાર કરાયું

જૂનાગઢ : જૂનાગઢના મગફળી સંશોધન નિર્દેશાલય દ્વારા મગફળીમાં ૧૦ થી ૨૦ ટકા સુધીનો ઉત્પાદન વધારો આપતું જૈવ ખાતર મિશ્રણ પણ તૈયાર કરવામાં આવ્યું છે. પાક વૃદ્ધિ કરતા રાઈઝોબેક્ટેરીયા પ્રસાર માટે બનેલું છે. મિશ્રણમાં સારી ફોસ્ફેટ સોલ્યુબ્લિસેશન અને નાઈટ્રોજન ફિક્સેશનનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે. જે પાક વૃદ્ધિના પ્રસાર અને ઘટકોની સંભાળ કરે છે. આ મિશ્રણ ટેલ્કમ પાઉડર જેવા રૂપમાં તૈયાર કરવામાં આવ્યો છે.

ગ્રીન સંદેશ | એગ્રોટેક — સોમવાર ૦૮ ઓક્ટોબર, ૨૦૧૨

જૂનાગઢના રાષ્ટ્રીય મગફળી સંશોધન નિર્દેશાલય દ્વારા ફોતરાંમાંથી એન્ઝાઇમ સેલ્યુલસ બનાવવાની ટેક્નોલોજી વિકસાવાઈ: ૧૦૦ કિલો ફોતરાંમાંથી ૩,૫૦ હજાર સુધીની વધારાની આવક ખેડૂતોને મળશે: ૧૦૦ ગ્રામ ફોતરાંમાંથી ઔદ્યોગિક ક્ષેત્રમાં વપરાતા એન્ઝાઇમ સેલ્યુલસના ૨૦૦૦ યુનિટ બને છે: ફેબ્રિકેશન, એનિમલ ફીડ, બાયો સ્ટોન વોશિંગ, ટેક્સટાઇલ, ફૂડ ઇન્ડસ્ટ્રીઝ સહિતના ઉદ્યોગોમાં એન્ઝાઇમ સેલ્યુલસનો થતો ઉપયોગ: રાજ્યમાં ૧૨ લાખ હેક્ટરમાં મગફળી વાવનાર ખેડૂતોને ફાયદો

મગફળીનાં ફોતરાં પણ ખેડૂતોને કરાવશે કમાણી

અત્યારે ૮૦ ટકા એન્ઝાઇમ બહારથી મંગાવવું પડે છે

New seed variety to increase groundnut yield

દુષ્કાળ અને રોગચાળા સામે ટક્કર ઝીલી શકતી મગફળીની નવી જાત શોધાઈ

'ગિરનાર-૨' ૨૬ ટકા વધુ ઉત્પાદન આપશે : 'ગિરનાર-૩' પાણીની અછતને સહન કરી શકે છે

ખેતીમાં સૌથી મોટી સમસ્યા સમાન દુષ્કાળ અને રોગચાળા સામે ટક્કર ઝીલી શકે તેવી મગફળીની બે નવી જાત જૂનાગઢના મગફળી સંશોધન નિર્દેશાલય દ્વારા બહાર પાડવામાં આવી છે. ગિરનાર ૨ અને ૩ નામની આ બન્ને જાતમાં જુદા જુદા પ્રકારની વિશેષતાઓ રહેલી છે. જેના કારણે સૌરાષ્ટ્ર સહિત રાજ્ય અને દેશની ખેતીમાં મગફળીના ક્ષેત્રમાં એક નવી દિશા મળી છે.

સમગ્ર દેશમાં ખરીફ સિઝનમાં મગફળીનો સારો એવો પાક લેવામાં આવે છે. સૌરાષ્ટ્ર પ્રદેશની લાખ્ખો હેક્ટર જમીનમાં વર્ષની ત્રણેય સિઝનમાં મગફળીનું વાવેતર થાય છે. ગુજરાત મગફળી પકવતું દેશનું અગ્રીમ રાજ્ય છે. ત્યારે જૂનાગઢમાં આવેલા રાષ્ટ્રીય મગફળી સંશોધન નિર્દેશાલય દ્વારા મગફળીની બે નવી જાતનું સંશોધન કરવામાં આવ્યું છે.

જૂનાગઢના ગિરનારના કારણે આ બન્ને જાતને 'ગિરનાર' નામ આપવામાં આવ્યું છે. ગિરનાર-૨ ની ખેતી ઉત્તરીય રાજસ્થાન, પંજાબ અને ઉત્તર પ્રદેશમાં ખરીફ સિઝનમાં કરવામાં આવી રહી છે. મગફળીની આ જાત હેક્ટરે ૩,૯૭૫ કિલોનું ઉત્પાદન આપે છે. અન્ય પ્રજાતિ એમ-૧૩ પ્રતિ હેક્ટર ૩,૧૫૧ કિલોનું ઉત્પાદન આવે છે. એટલે કે આ નવી પ્રજાતિ ગિરનાર-૨ માં ખેડૂતોને ૨૬ ટકા ઉત્પાદન વધારે મળે છે. સાથે સાથે તેનો દાણો ભરાવદાર હોવાથી ખેડૂતોને તેના બજારભાવ સારા મળશે.

જ્યારે ગિરનાર-૩ પ્રજાતિ દુષ્કાળ અને રોગચાળા સામે ટક્કર ઝીલી શકે છે. મગફળીની આ પ્રજાતિમાં ઉત્પાદન ૧,૫૦૦ થી ૨,૦૦૦ કિલો આવે છે. પાંદડામાં ખાણિયો અને થ્રિપ્સ નામના રોગચાળા સામે વધુ રક્ષણાત્મક શક્તિ ધરાવે છે.

विभिन्न गुजराती समाचार पत्रों एवं टाइम्स ऑफ इंडिया में मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के अनुसंधान एवं विकास कार्यकलापों के संबंध में समाचार

संस्थान सेमिनार

नाम और पदनाम	तारीख	विषय
डॉ. के. ए. कलारिया वैज्ञानिक (पादप कार्यकी)	२० अक्तूबर, २०१२	'पर्णरहित प्रतिदीप्ति (क्लोरोफिल फ्लुओरेसेंस) : पादप कार्यिकी में क्रियात्मक क्रियाविधि और भौतिक साधन' तथा 'जल की अत्यधिक कमी के अंतर्गत मूँगफली में स्थायी म्लानि स्थल के सूचकांक के रूप में संबंधित सापेक्ष जलांश'
डॉ. अजय बी. सी. वैज्ञानिक (पादप प्रजनन)	२० अक्तूबर, २०१२	'मूँगफली में कम फॉस्फोरस के अनुकूलन हेतु जीनप्ररूप (जीनोटाइप) की खोज'
डॉ. हरीश जी. वैज्ञानिक (कीट विज्ञान)	२३ अक्तूबर, २०१२	'मूँगफली में कीट की आबादी व गतिकी पर मौसमी मापदंडों (पैरामीटर) का प्रभाव'
डॉ. एस. के. बेरा वरिष्ठ वैज्ञानिक (कोशिकानुवंशिकी)	२९ अक्तूबर, २०१२	'सिम्पल सीक्वेंस रिपीट चिन्हकों (एस एस आर मार्कर्स) के उपयोग से पीनट बड नेक्रोसिस रोग के प्रति मूँगफली प्रतिरोध के अन्तर-विशिष्ट, व्युत्पन्न में आण्विक विविधता का अध्ययन'
	५ नवम्बर, २०१२	'मूँगफली में बीज वजन का सिम्पल सीक्वेंस रिपीट चिन्ह्कों (एस एस आर मार्कर्स) की आण्विक विविधता व सहयोजन'
श्री नटराज एम. वी. वैज्ञानिक (कीट विज्ञान)	८ नवम्बर, २०१२	'मूँगफली में चूषण कीटों और कीटनाशियों का प्रबंधन'
डॉ. राधाकृष्णन टी. प्रधान वैज्ञानिक (पादप प्रजनन)	११ दिसम्बर, २०१२	'मूँगफली में जैव व अजैव प्रतिबल प्रतिरोध हेतु ट्रांसजैनिक'

चित्रशाला

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में आए सौराष्ट्र (गुजरात) के किसान

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में आए राजस्थान के किसानों का एक दल

संपादक मंडल : रिंकू डे, ज्ञान प्रकाश मिश्र एवं जितेन्द्र भूषण मिश्र **फोटो : ए. एम. वखारिया**

प्रकाशक : निदेशक

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ - 362 001 गुजरात

वेब साइट : www.nrcg.res.in ई-मेल : director@nrcg.res.in फैक्स : +91 0285 2672550 फोन : +91 0285 2673041, 2672461

मुद्रण : राधिका प्रिन्टर्स, अहमदाबाद मो. 90999 11136